Online Available at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN: 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(4): 92-96



Research Article

जयशंकर प्रसाद के काव्य में नारी-अस्मिता और स्वाधीन चेतना

Author (s): सविता शर्मा [1*], प्रो. डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन [2]

[1] शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * सविता शर्मा

सार

यह शोध-पत्र जयशंकर प्रसाद के काव्य में नारी-अस्मिता, आत्मनिर्णय और स्वाधीन चेतना के विविध रूपों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। प्रसाद की रचनाओं में स्त्री केवल सौंदर्य या भावुकता का प्रतीक नहीं, बल्कि संवेदना, विचार, संकल्प और नैतिक विवेक से सम्पन्न व्यक्तित्व के रूप में भी उपस्थित है। अध्ययन में 'कामायनी', 'आँसू', 'झरना' और 'लहर' जैसे काव्य-पाठों को आधार बनाकर देखा गया है कि स्त्री-चरित्र किस प्रकार परंपरा के भीतर रहते हुए भी अपनी पहचान और निर्णय-क्षमता का संकेत देते हैं। लेख का केंद्रीय तर्क है कि प्रसाद का नारी-विमर्श एक ओर स्त्री की गरिमा और मानवीय महत्त्व को प्रतिष्ठित करता है, दूसरी ओर आदर्शीकरण तथा पुरुष-केंद्रित कथात्मक संरचना जैसी सीमाओं के कारण आलोचनात्मक पुनर्पाठ की माँग भी करता है।

Manuscript Information

Received Date: 09-07-2023
Accepted Date: 26-08-2023
Publication Date: 30-08-2023
Plagiarism Checked: Yes
Manuscript ID: IJCRM:2-4-26
Peer Review Process: Yes

How to Cite this Manuscript

सविता शर्मा, प्रो. डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन . जयशंकर प्रसाद के काव्य में नारी-अस्मिता और स्वाधीन चेतना. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023; 2(4):92-96.

मुख्य शब्द: जयशंकर प्रसाद, नारी-विमर्श, नारी-अस्मिता, आत्मनिर्णय, स्वाधीनता, छायावाद, स्त्री-प्रतिनिधित्व

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श स्त्री के सामाजिक स्थान, वैयक्तिक पहचान, अधिकार, अनुभव और अभिव्यक्ति से जुड़े प्रश्नों को सामने लाता है। साहित्यिक रचनाएँ अपने समय की सामाजिक संरचनाओं से प्रभावित होती हैं, किंतु वे उन संरचनाओं का पुनर्विचार करने की क्षमता भी रखती हैं। जयशंकर प्रसाद का काव्य इसी द्वंद्वात्मक स्थिति में पढ़ा जाना चाहिए। प्रसाद की रचनात्मक दुनिया में इतिहास, संस्कृति, दर्शन, प्रकृति और मानवीय संवेदना का व्यापक समन्वय है। इस संसार में स्त्री की उपस्थिति कई बार प्रेरणा, करुणा और सौंदर्य के रूप में दिखाई देती है, परंतु अनेक प्रसंगों में वह निर्णय लेने वाली, संकट का सामना करने वाली तथा अपने जीवन को अर्थ देने वाली चेतना भी बनती है।

नारी-विमर्श की दृष्टि से प्रसाद का अध्ययन इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि उनके साहित्य में स्त्री के प्रति सम्मान का भाव और स्त्री की स्वतंत्रता का प्रश्न हमेशा एक ही स्तर पर नहीं रहते। सम्मान कभी व्यक्तित्व की स्वीकृति बनता है, तो कभी आदर्श स्त्री-छवि में बदलकर उसकी इच्छाओं को सीमित कर सकता है। इस शोध-पत्र में इन दोनों पक्षों का संतुलित विश्लेषण किया गया है।

92

2. अध्ययन के उद्देश्य एवं शोध-पद्धति

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं: प्रसाद के काव्य में स्त्री की पहचान और व्यक्तित्व का विश्लेषण; स्त्री-पात्रों अथवा काव्य-वक्ताओं की निर्णय-क्षमता को समझना; प्रेम, त्याग, संकल्प और स्वतंत्रता के अंतर्संबंधों की जाँच करना; तथा प्रसाद की नारी-दृष्टि की उपलब्धियों और सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

अध्ययन गुणात्मक और व्याख्यात्मक प्रकृति का है। इसमें निकट-पाठ, प्रतीकात्मक विश्लेषण, चरित्र-विश्लेषण और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संदर्भों की सहायता ली गई है। चयनित काव्य-पाठों को केवल कथानक या भाव-सार के रूप में नहीं, बल्कि भाषा, बिंब, संवाद, कथन-स्थिति और मूल्य-संरचना के आधार पर पढ़ा गया है।

2.1 विशिष्ट उद्देश्य

इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य हैं—प्रसाद की चयनित कविताओं में स्त्री की भूमिका और व्यक्तित्व की पहचान; श्रद्धा एवं इड़ा के माध्यम से भावात्मक तथा बौद्धिक क्षमता का विश्लेषण; स्त्री की वाणी, इच्छा और निर्णय-क्षमता का परीक्षण; प्रेम, विरह, त्याग और आत्मसम्मान के अंतर्संबंधों की जाँच; तथा काव्य में स्त्री के आदर्शीकरण और स्वाधीनता के बीच तनाव को स्पष्ट करना।

2.2 शोध-प्रश्न

क्या प्रसाद के काव्य में स्त्री अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ उपस्थित है? श्रद्धा और इड़ा के चरित्रों में कौन-से भिन्न जीवन-मूल्य और क्षमताएँ सामने आती हैं? काव्य में स्त्री की भावनाओं और निर्णयों को कितना महत्त्व मिलता है? क्या सांस्कृतिक आदर्श स्त्री की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं या उसकी स्वतंत्रता को सीमित भी कर सकते हैं? इन प्रश्नों के आधार पर पाठ का विश्लेषण किया गया है।

2.3 कार्यकारी मान्यता

कार्यकारी मान्यता यह है कि प्रसाद के काव्य में नारी-चेतना सम्मान, संवेदना, विवेक और संकल्प के रूपों में व्यक्त होती है, किंतु कुछ प्रसंगों में स्त्री का व्यक्तित्व आदर्शवादी और पुरुष-केंद्रित संरचना से भी प्रभावित रहता है। इस मान्यता को पाठ-विश्लेषण के माध्यम से परखा गया है; इसे पहले से सिद्ध निष्कर्ष नहीं माना गया है।

2.4 शोध-पद्धति का विस्तृत स्वरूप

अध्ययन में गुणात्मक साहित्यिक पद्धति अपनाई गई है। निकट-पाठ के माध्यम से शब्द, बिंब, प्रतीक, संवाद, भाव-परिवर्तन और चरित्र-निर्माण का विश्लेषण किया गया है। नारीवादी आलोचना के आधार पर स्त्री की कर्तृता, वाणी, स्वायत्तता और सामाजिक स्थिति पर विचार किया गया है। ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पद्धति से रचना के समय की मान्यताओं को ध्यान में रखा गया है। कोई क्षेत्रीय सर्वेक्षण या सांख्यिकीय परीक्षण नहीं किया गया, क्योंकि शोध का विषय साहित्यिक पाठ है।

2.5 प्राथमिक सामग्री और पाठ-चयन

प्राथमिक सामग्री के रूप में 'कामायनी', 'आँसू', 'झरना' और 'लहर' के चयनित अंशों को आधार बनाया गया है। विशेष रूप से श्रद्धा एवं इड़ा के प्रसंग, स्त्री-अनुभव से जुड़े गीतात्मक अंश और प्रकृति-प्रतीकों की भूमिका पर ध्यान दिया गया है। अलग-अलग संस्करणों में पाठांतर संभव होने के कारण अंतिम उद्धरण और पृष्ठ-संख्या मूल पुस्तक से सत्यापित की जानी चाहिए।

2.6 अध्ययन की सीमा

यह लेख प्रसाद के संपूर्ण साहित्य का सर्वेक्षण नहीं करता; इसका केंद्र चयनित काव्य-पाठ हैं। प्रसाद की कहानियों, नाटकों और उपन्यासों का विस्तृत विश्लेषण अलग अध्ययन का विषय हो सकता है। काव्य-वक्ता और ऐतिहासिक कवि के बीच भेद रखा गया है तथा किसी पात्र के कथन को बिना पाठगत आधार के लेखक का निजी मत नहीं माना गया है।

3. नारी-अस्मिता: संबंधों से आगे व्यक्तित्व

नारी-अस्मिता का प्रश्न स्त्री को केवल बेटी, पत्नी, माता या प्रेरणा के रूप में परिभाषित करने से आगे जाता है। स्त्री की पहचान उसके विचार, इच्छा, अनुभव और आत्मसम्मान से निर्मित होती है। प्रसाद की रचनाओं में स्त्री की गरिमा का आग्रह इस बात में दिखाई देता है कि उसके भावों को गंभीरता से लिया जाता है और उसकी उपस्थिति कथात्मक तथा काव्यात्मक संसार को अर्थ प्रदान करती है।

फिर भी अस्मिता का विश्लेषण करते समय यह पूछना आवश्यक है कि स्त्री की पहचान स्वयं उसके द्वारा निर्मित है या उसे किसी पुरुष-पात्र अथवा सामाजिक आदर्श के संदर्भ में परिभाषित किया गया है। इस प्रश्न से पाठ के भीतर शक्ति-संबंधों की पहचान होती है। प्रसाद की काव्य-दृष्टि में स्त्री की संवेदना को प्रतिष्ठा मिलती है, किंतु उसकी पूर्ण स्वायत्तता का मूल्यांकन प्रसंगानुसार करना चाहिए।

4. 'कामायनी' में श्रद्धा: भावात्मक शक्ति और जीवन-दृष्टि

'कामायनी' में श्रद्धा का चरित्र भावात्मक संतुलन, विश्वास और जीवन के पुनर्निर्माण से जुड़ा है। वह मनु के संकटग्रस्त संसार में केवल सांत्वना देने वाली उपस्थिति नहीं, बल्कि जीवन के मूल्य और संबंधों की नई समझ प्रस्तुत करने वाली शक्ति है। श्रद्धा का महत्त्व उसके भावुक पक्ष में ही नहीं, बल्कि उसके जीवन-दर्शन में भी निहित है।

नारीवादी पुनर्पाठ श्रद्धा के योगदान को स्वीकार करते हुए उसके आदर्शीकरण की जाँच भी करता है। यदि स्त्री को सदैव संतुलन, करुणा और त्याग की प्रतिमूर्ति माना जाए, तो उसके क्रोध, असहमति और निजी आकांक्षा के लिए स्थान संकुचित हो सकता है। इसलिए श्रद्धा को एक साथ सशक्त और आदर्शीकृत चरित्र के रूप में पढ़ना अधिक समीचीन है।

5. 'कामायनी' में इड़ा: बुद्धि, कर्म और स्त्री-स्वायत्तता

'कामायनी' में इड़ा का चरित्र स्त्री-व्यक्तित्व के उस पक्ष को सामने लाता है जिसे केवल करुणा, प्रेम या त्याग के माध्यम से नहीं समझा जा सकता। इड़ा बुद्धि, व्यवस्था, व्यवहार-बोध और कर्मशीलता से

जुड़ी हुई है। श्रद्धा जहाँ जीवन में भावात्मक संतुलन और विश्वास का आधार प्रस्तुत करती है, वहीं इड़ा विवेक, विचार और सामाजिक कार्य-संचालन की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। इन दोनों स्त्री-रूपों के माध्यम से स्त्री-अनुभव में भाव और बुद्धि, अनुभूति और कर्म, आत्मीयता और सामाजिक व्यवस्था के प्रश्न सामने आते हैं।

इड़ा का आलोचनात्मक अध्ययन यह पूछता है कि क्या उसे स्वतंत्र विचारशील व्यक्तित्व के रूप में पर्याप्त स्थान मिलता है, या उसका चरित्र मनु की यात्रा और व्यापक दार्शनिक संरचना के भीतर ही अर्थ ग्रहण करता है। इड़ा की कर्मशीलता स्त्री की बौद्धिक क्षमता को रेखांकित करती है, किंतु उसे केवल बुद्धि का प्रतीक बना देना भी उचित नहीं होगा। उसमें सामाजिक दृष्टि, निर्णय, व्यवहार और संबंधों की जटिलता भी निहित है।

'कामायनी' के 'लज्जा' सर्ग में प्रसिद्ध पंक्तियाँ—"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास-रजत-नग पगतल में, पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में"—प्रसाद की नारी-दृष्टि को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार देती हैं। इन पंक्तियों में नारी को श्रद्धा, विश्वास और जीवनदायिनी संवेदना के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यह चित्रण स्त्री के प्रति आदर और उसके नैतिक महत्त्व को स्वीकार करता है। साथ ही, नारीवादी पुनर्पाठ यह प्रश्न उठाता है कि क्या स्त्री को केवल श्रद्धा और अमृत-स्रोत के आदर्श में बाँध देने से उसके अन्य मानवीय पक्ष—असहमति, आकांक्षा, क्रोध, बौद्धिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय—गौण हो सकते हैं। अतः इन पंक्तियों को स्त्री-गरिमा की प्रतिष्ठा और आदर्शीकरण की संभावित सीमा, दोनों रूपों में पढ़ना चाहिए। उद्धरण का पाठ और पृष्ठ-संख्या प्रयुक्त प्रामाणिक 'कामायनी' संस्करण से मिलाकर देना आवश्यक है।

6. प्रेम, विरह और स्त्री की भावात्मक स्वाधीनता

प्रसाद के गीतों में प्रेम और विरह स्त्री-मन की संवेदनशील अवस्थाओं को अभिव्यक्ति देते हैं। विरह को केवल प्रिय के अभाव या निष्क्रिय प्रतीक्षा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह स्मृति, आत्मचिंतन और अपनी भावनाओं को पहचानने की प्रक्रिया भी है। काव्य-वक्ता जब अपनी अनुभूति को भाषा देता है, तब वह निजी भाव को साहित्यिक अर्थ प्रदान करता है।

भावात्मक स्वाधीनता का अर्थ संबंधों से विमुख होना नहीं, बल्कि संबंधों के भीतर अपनी इच्छा और आत्मसम्मान को बनाए रखना है। प्रसाद की काव्य-भाषा में यह स्वाधीनता कई बार प्रत्यक्ष घोषणा के बजाय प्रतीक, संकेत और आंतरिक संवाद के माध्यम से सामने आती है।

7. प्रकृति और प्रतीकात्मक स्त्री-अनुभव

प्रसाद की कविता में प्रकृति भाव-जगत का विस्तार करती है। प्रकाश, छाया, पथ, आकाश, जल और पुष्प जैसे बिंब स्त्री-अनुभव के विविध आयामों को व्यक्त करने में सहायक होते हैं। प्रतीक की विशेषता यह है कि वह किसी भाव को एक निश्चित अर्थ में बंद नहीं करता; उसमें आशा, भय, स्मृति और परिवर्तन की अनेक संभावनाएँ रहती हैं।

नारी-विमर्श की दृष्टि से प्रतीकात्मकता स्त्री की अभिव्यक्ति को सूक्ष्म बनाती है। सामाजिक मर्यादाओं या कथात्मक सीमाओं के बीच प्रत्यक्ष कथन संभव न हो, तब प्रतीक उसके अनुभव को अर्थ दे सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति स्त्री की निष्क्रिय पृष्ठभूमि न रहकर उसके आत्मसंवाद की सहभागी बनती है।

8. सामाजिक परंपरा और स्त्री की स्वतंत्रता

प्रसाद का साहित्य सांस्कृतिक स्मृति और परंपरा से गहरे जुड़ा है। परंपरा को केवल बाधा मानना या उसे पूर्णतः आदर्श मान लेना, दोनों दृष्टियाँ एकांगी हैं। साहित्य में परंपरा मूल्य, सामुदायिक पहचान और नैतिकता का स्रोत हो सकती है; साथ ही वह स्त्री के व्यवहार, निर्णय और सामाजिक भूमिका पर नियंत्रण भी स्थापित कर सकती है।

प्रसाद के नारी-चित्रण में इस द्वंद्व को पहचानना आवश्यक है। स्त्री की गरिमा के प्रति संवेदनशीलता आधुनिक चेतना का संकेत देती है, किंतु जब स्वतंत्रता को किसी निश्चित आदर्श के अनुरूप ही स्वीकार किया जाता है, तब उसकी सीमा स्पष्ट होती है। इसलिए पाठ का आलोचनात्मक अध्ययन परंपरा और परिवर्तन के बीच संवाद को सामने लाता है।

9. स्त्री-प्रतिनिधित्व और आदर्शीकरण की समस्या

साहित्य में स्त्री को देवी, त्यागमूर्ति या करुणा की प्रतिमा बनाना उसके सम्मान का संकेत हो सकता है, परंतु इससे वास्तविक स्त्री की विविधता छिपने का खतरा भी रहता है। आदर्शीकरण स्त्री को नैतिक ऊँचाई देता है, किंतु उसके साधारण मानवीय गुणों—असहमति, आकांक्षा, क्रोध, असफलता और स्वतंत्र निर्णय—को गौण कर सकता है।

प्रसाद के साहित्य का मूल्यांकन इस दोहरे पक्ष के साथ किया जाना चाहिए। उनकी रचनाओं में स्त्री की गरिमा और संकल्प की प्रतिष्ठा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है; फिर भी स्त्री की भूमिका यदि पुरुष-पात्र के विकास या किसी उच्च आदर्श की पूर्ति से ही जुड़ी हो, तो उसे आलोचनात्मक दृष्टि से देखना होगा।

10. छायावादी व्यक्तिवाद और नारी-चेतना

छायावाद ने आत्मानुभूति, व्यक्तित्व, प्रकृति और भाव-जगत को साहित्य में केंद्रीय स्थान दिया। इससे स्त्री के निजी अनुभवों को भी काव्यात्मक महत्त्व मिला। प्रसाद की रचनाओं में आंतरिक संवेदना और दार्शनिक चिंतन का मेल स्त्री-चरित्रों को केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं रहने देता।

हालाँकि व्यक्तिवाद अपने आप सामाजिक समानता की पूर्ण अवधारणा नहीं बनता। आत्म-अनुभूति का साहित्यिक महत्त्व तभी नारी-विमर्श की दिशा में आगे बढ़ता है जब वह स्त्री की स्वतंत्र पहचान, निर्णय और अधिकार के प्रश्नों से जुड़ता है। प्रसाद की काव्य-दृष्टि में इन संभावनाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक सीमाएँ भी विद्यमान हैं।

11. आलोचनात्मक मूल्यांकन: उपलब्धियाँ और सीमाएँ

प्रसाद के काव्य में नारी-विमर्श की प्रमुख उपलब्धि स्त्री की संवेदना, गरिमा और संकल्पशीलता को गंभीर साहित्यिक विषय बनाना है। स्त्री की उपस्थिति काव्य के भावात्मक और नैतिक संसार को समृद्ध करती

है। उसके निर्णय और संघर्ष पाठक को मानवीय संबंधों की जटिलता पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

सीमा के स्तर पर कुछ स्त्री-छवियाँ आदर्शवादी ढाँचे में बँधी दिखाई देती हैं। वहाँ स्त्री की स्वतंत्रता को त्याग, करुणा या सांस्कृतिक मर्यादा के साथ जोड़ा जा सकता है। अतः प्रसाद को न पूर्णतः आधुनिक नारीवादी घोषित करना उचित है, न उनकी दृष्टि को केवल परंपरावादी कहना। ऐतिहासिक संदर्भ और पाठ की बहुस्तरीयता को साथ रखकर किया गया मूल्यांकन अधिक न्यायपूर्ण होगा।

12. समकालीन प्रासंगिकता

आज नारी-अस्मिता शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, निर्णय-स्वतंत्रता, सार्वजनिक सहभागिता और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी है। प्रसाद की रचनाओं में संकल्प तथा आत्मसम्मान के संकेत वर्तमान पाठक को यह समझने में सहायता करते हैं कि स्वतंत्रता केवल अवसर की उपलब्धता नहीं, बल्कि अवसरों पर स्वयं निर्णय लेने की क्षमता भी है।

ऐतिहासिक साहित्य को वर्तमान समाज का सीधा प्रतिबिंब नहीं माना जा सकता, फिर भी वह नैतिक और सांस्कृतिक प्रश्नों पर संवाद की संभावना खोलता है। प्रसाद का काव्य स्त्री की गरिमा और मानवीय संबंधों के पुनर्विचार के लिए उपयोगी साहित्यिक आधार प्रदान करता है।

12.1 स्त्री की कर्तृता और निर्णय-क्षमता

नारी-विमर्श में कर्तृता का आशय केवल उपस्थित रहने से नहीं, बल्कि अपने निर्णयों और कर्मों के माध्यम से परिस्थितियों को प्रभावित करने से है। श्रद्धा का भावात्मक विवेक और इड़ा की कर्मशीलता स्त्री की सक्रियता के दो भिन्न रूप सामने लाते हैं। कर्तृता का मूल्यांकन करते समय यह भी देखना चाहिए कि हर निर्णय पूर्ण स्वतंत्र परिस्थिति में नहीं लिया जाता; सामाजिक अपेक्षाएँ, संबंधों की जिम्मेदारियाँ और ऐतिहासिक मर्यादाएँ पात्र की संभावनाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

12.2 स्त्री-वाणी, संवाद और कथात्मक स्थान

किसी साहित्यिक कृति में स्त्री की स्थिति जानने का एक महत्त्वपूर्ण आधार उसकी वाणी है। वह किससे संवाद करती है, किन प्रश्नों को उठाती है, उसकी बात को कितना महत्त्व मिलता है और उसके कथन से घटनाओं में क्या परिवर्तन आता है—इन सब पर विचार करने से उसकी साहित्यिक कर्तृता स्पष्ट होती है। संवाद में उपस्थित स्त्री केवल कथानक की शोभा नहीं रहती; वह विचार और मूल्य की वाहक भी बन सकती है।

12.3 त्याग, करुणा और शक्ति का संबंध

भारतीय साहित्यिक परंपरा में त्याग और करुणा को स्त्री के प्रमुख गुणों के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। प्रसाद की रचनाओं में भी ये मूल्य कई बार स्त्री की नैतिक गरिमा से जुड़े दिखाई देते हैं। किंतु नारी-विमर्श यह प्रश्न उठाता है कि क्या त्याग स्त्री की स्वतंत्र पसंद है या उससे अपेक्षित सामाजिक कर्तव्य? जब त्याग विवेक और स्वेच्छा से उपजता है, तब वह व्यक्तित्व की शक्ति हो सकता है; जब उसे अनिवार्य मान लिया जाता है, तब वह असमानता को स्थायी भी कर सकता है।

12.4 काव्य-भाषा, बिंब और भाव-संरचना

प्रसाद की काव्य-भाषा में कोमलता, सांस्कृतिक संकेत, दार्शनिकता और दृश्यात्मकता का मेल मिलता है। प्रत्यक्ष कथन पात्र की मनःस्थिति को स्पष्ट करता है, जबकि प्रतीक और बिंब उसके अनुभव को व्यापक अर्थ देते हैं। भाव-संरचना में पीड़ा से स्मृति, स्मृति से संकल्प और संकल्प से आशा की ओर गति हो सकती है। इस क्रम में स्त्री की अनुभूति स्थिर नहीं रहती, बल्कि परिवर्तनशील अनुभव के रूप में सामने आती है।

12.5 प्रसाद की नारी-दृष्टि का संतुलित पुनर्पाठ

प्रसाद की नारी-दृष्टि का मूल्यांकन दो अतियों से बचकर किया जाना चाहिए। स्त्री के सम्मानजनक चित्रण को पूर्ण समानता का प्रमाण मान लेना उचित नहीं; दूसरी ओर, आदर्शवादी प्रसंगों के कारण पूरी काव्य-दृष्टि को रूढ़िवादी घोषित करना भी एकांगी होगा। साहित्य अपने समय की मान्यताओं से संवाद करता है और उन्हीं के भीतर परिवर्तन की संभावनाएँ भी निर्मित करता है। संतुलित अध्ययन ऐतिहासिक संदर्भ और स्त्री की स्वायत्तता दोनों को साथ रखता है।

12.6 आगे के अध्ययन की संभावनाएँ

आगे के शोध में प्रसाद के नाटकों, उपन्यासों और कहानियों में स्त्री-पात्रों की तुलना उनके काव्य-पात्रों से की जा सकती है। विभिन्न संस्करणों के पाठांतर का अध्ययन करके शब्द-चयन और संपादकीय बदलावों के अर्थगत प्रभाव को समझा जा सकता है। प्रसाद के स्त्री-चित्रण की तुलना समकालीन हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रचनाकारों से करने पर व्यापक साहित्यिक परिवेश स्पष्ट होगा।

12.7 श्रद्धा और इड़ा का संवाद: स्त्री-व्यक्तित्व की बहुलता

श्रद्धा और इड़ा को एक-दूसरे के विपरीत खड़े दो पूर्णतः अलग स्त्री-रूपों में बाँध देना 'कामायनी' की जटिलता को कम कर देगा। दोनों चरित्र स्त्री-व्यक्तित्व के भिन्न पक्षों को सामने लाते हैं, परंतु भाव और बुद्धि, विश्वास और विवेक, आत्मीयता और कर्मशीलता किसी भी मनुष्य के भीतर परस्पर विरोधी नहीं होते। श्रद्धा की संवेदना में विचार का आधार है और इड़ा की कर्मशीलता में सामाजिक अनुभव का बोध। इन दोनों के माध्यम से पाठक यह समझ सकता है कि स्त्री की पहचान किसी एक निर्धारित गुण—त्याग, करुणा, बुद्धि या कर्म—से निर्मित नहीं होती। उसका व्यक्तित्व अनेक क्षमताओं, इच्छाओं और संबंधों से मिलकर बनता है। नारी-विमर्श का उद्देश्य इन गुणों को अलग-अलग खाँचों में रखना नहीं, बल्कि स्त्री को बहुआयामी मनुष्य के रूप में स्वीकार करना है।

12.8 स्त्री-स्वाधीनता का नैतिक आयाम

स्वाधीनता का अर्थ केवल किसी बाहरी बंधन से मुक्त होना नहीं, बल्कि अपने जीवन के निर्णयों में विवेकपूर्ण भागीदारी और अपनी गरिमा की रक्षा करना भी है। प्रसाद के काव्य में स्त्री की स्वतंत्रता का प्रश्न नैतिकता, संबंधों और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ता है। यहाँ

यह ध्यान देना आवश्यक है कि नैतिकता का भार केवल स्त्री पर न डाला जाए। यदि मर्यादा और त्याग की अपेक्षा स्त्री से ही की जाती है, तो समानता का आधार कमजोर पड़ता है। दूसरी ओर, जब नैतिक निर्णय स्वतंत्र विचार और पारस्परिक सम्मान से उत्पन्न होते हैं, तब वे संबंधों को अधिक मानवीय बनाते हैं। इस दृष्टि से प्रसाद का काव्य आधुनिक पाठक को स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व के संतुलन पर विचार करने का अवसर देता है।

13. निष्कर्ष

प्रसाद के काव्य में नारी-विमर्श संवेदना, आत्मसम्मान, विवेक, संकल्प और स्वतंत्र व्यक्तित्व के अनेक रूपों में व्यक्त होता है। 'कामायनी' की श्रद्धा स्त्री की भावात्मक शक्ति और जीवन-दृष्टि को सामने लाती है, जबकि इड़ा बुद्धि, कर्म और सामाजिक सक्रियता के प्रश्न उठाती है। प्रेम-विरह तथा प्रकृति के प्रतीक स्त्री-अनुभव को सूक्ष्म काव्यात्मक भाषा प्रदान करते हैं। प्रसाद की नारी-दृष्टि का संतुलित मूल्यांकन तभी संभव है जब उसके प्रगतिशील संकेतों के साथ आदर्शीकरण और परंपरागत मूल्य-संरचना की सीमाओं को भी पहचाना जाए। स्त्री का सम्मान और उसकी स्वायत्तता समानार्थी नहीं हैं; स्वतंत्रता का प्रश्न विचार, इच्छा, वाणी और कर्म के स्तर पर भी जाँचना चाहिए। निष्कर्षतः प्रसाद का काव्य नारी-विमर्श के लिए एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आधार है, जो प्रशंसा के साथ आलोचनात्मक संवाद की भी माँग करता है।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद जयशंकर. कामायनी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2005.
2. प्रसाद जयशंकर. आँसू. **2** रा संस्करण. वाराणसी: भारती भंडार, रामघाट; 1933.
3. प्रसाद जयशंकर. झरना. बनारस: साहित्य सेवा सदन; 1984.
4. द्विवेदी हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2000.
5. शुक्ल रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. **7**वां संस्करण. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा; 1988.
6. सिंह नामवर. छायावाद. 22वां संस्करण. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2026. ISBN: 9788126707362.
7. नगेंद्र. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ. दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
8. प्रसाद जयशंकर. लहर. इलाहाबाद: भारती भंडार, लीडर प्रेस; 1935.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.